FOR P.G. Sem-2
CC-6, Unit-IV
& U.G.-II (Hons)
Paper-IV

IMPACT OF WORLD WAR-II

द्वितीय विश्वयुद्ध : परिणाम

द्वितीय विश्वयुद्ध का अत्यंत व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव हुआ। इसने बिल्कुल नये युग की शुरुआत की। राजनीति, समाज, संस्कृति विज्ञान, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध हर क्षेत्र में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। इस युद्ध में मित्रदेशों की जीत हुई और धुरी शक्तियों की पराजय, दूसरे शब्दों में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस की जीत हुई और जर्मनी, इटली, जापान की पराजय। जनतंत्र की जीत हुई एवं तानाशाही शक्तियाँ कमजोर हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का इतिहास जनतंत्र की सफलता का इतिहास है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् राजनैतिक-आर्थिक दृष्टिकोण से यूरोप का महत्व कम हो गया। वस्तुतः युद्ध के पूर्व तक विश्व इतिहास में कभी इंग्लैंड तो कभी फ्रांस तो कभी आस्ट्रिया तो कभी जर्मनी, इटली का प्रभुत्व कायम था किंतु युद्ध के पश्चात् इन सभी यूरोपीय शक्तियों की स्थिति कमजोर हो गयी और उनका स्थान अमेरिका ने लिया। इंग्लैंड की स्थिति दुर्बल हो गयी उसके तमाम उपनिवेश स्वाधीनता आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्र हुए। इसी प्रकार इटली से भी उसके सभी उपनिवेश छिन लिये गये। इसी तरह जर्मनी का विभाजन कर उसे पंगु बना दिया गया।

युद्ध के पश्चात् अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर अमेरिका और रूस नामक दो महाशक्तियों का उदय हुआ। युद्धकाल में अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि हुई थी तथा उसने विश्व के तमाम देशों को कर्ज दिया था। इनत आर्थिक स्थिति के कारण उसके सैन्य शक्ति में भी वृद्धि हुई और इसी क्रम में उसने परमाणु शस्त्र का भी विकास किया। इसी प्रकार सोवियत संघ ने स्टालिन के कार्यकाल में आर्थिक एवं सैन्य सुदृढ़ता प्राप्त की। 1949 में परमाणु बम का विकास करके अपनी सुदृढ़ता का प्रमाण दिया। इसने यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में साम्यवादी सरकार की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर दो महाशक्तियों के उदय ने 'शीत-युद्ध' (Cold War) को जन्म दिया। ये दोनों अलग-अलग विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करती थी। अमेरिका जहाँ पूँजीवादी

Scanned with CamScanner

विचारों का पोषक था वहीं सोवियत संघ साम्यवादी विचारों का। दोनों देशों के बीच विभिन्न समस्याओं के संबंध तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गये। 1945 के बाद अमेरिका एवं रूस के बीच कोई युद्ध तो नहीं हुआ किंतु वाक्-युद्ध अवश्य हुआ। दोनों पक्षों ने एकदूसरे के विरुद्ध विषवमन किया जिसे शीतयुद्ध कहा जाता है। यह दोनों देशों के बीच 1970 के दशक तक चलता रहा। विचारधारा (साम्यवाद एवं पूँजीवाद) के आधार पर भी यूरोप दो गुटों पूर्वी तथा पश्चिमी में बँट गया तथा दोनों गुट रूस (पूर्वी यूरोप) और अमेरिका (पश्चिमी यूरोप) जैसी महाशक्तियों से संचालित होने लगे।

शीतयुद्ध ने प्रादेशिक संगठनों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। दोनों पक्षों ने अपनी भावी सुरक्षा के लिए प्रादेशिक निर्माण की ओर अग्रसर हुए। साम्यवाद को रोकने के लिए पश्चिमी राष्ट्रों ने अमेरिका के नेतृत्व में NATO, CENTO, SEATO बगदाद पैक्ट जैसे सुरक्षा संगठनों की स्थापना की दूसरी ओर रूस के द्वारा 'वारसा पैक्ट" नामक सुरक्षा संगठन की स्थापना की गई। इन प्रादेशिक संगठनों के निर्माण ने सैन्यवाद एवं ध्रुवीकरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ तनाव एवं भय का माहौल बनाया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के फलस्वरूप उपनिवेशवाद के समापन का मार्ग प्रशस्त हुआ। विश्वयुद्ध के खर्चे एवं तबाही ने साम्राज्यवादी शक्तियों को खोखला कर दिया। आर्थिक एवं सैन्य दृष्टि से वे इतने कमजोर हो गये कि अब दुनिया भर में फैले हुए उपनिवेशों पर वे अपना नियंत्रण कायम नहीं रख सके। उनकी इसी कमजोरी का लाभ उठाकर एशिया, अफ्रीका के देशों ने अपने को स्वतंत्र करने के लिए संघर्ष को तेज कर दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान औपनिवेशिक देशों ने स्वतंत्रता, जनतंत्र और आत्मनिर्णय का नारा दिया था। इन नारों का हवाला देते हुए साम्राज्यवादी ताकत के अधीन देशों ने अपने स्वतंत्रता आंदोलन को उचित बतलाया। भारत, बर्मा, श्रीलंका, मलाया, मिस्र, कंबोडिया, लाओस, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि देशों ने औपनिवेशिक दासता से मुक्ति पाई। एशिया के पुनरोत्थान की यह घटना परमाणु बम से कहीं अधिक विस्फोटक थी। ये नवस्वतंत्र देश 'तृतीय विश्व' के रूप में जाने गये जिसने आगे चलकर वैश्विक राजनीति को अपने तरीके से प्रभावित किया।

एशिया, अफ्रीका के नवोदित देश अपनी

Scanned with CamScanner

स्वतंत्रता के बारे में अत्यंत जागरूक थे। ये अपनी स्वतंत्रता पर किसी प्रकार का अतिक्रमण बर्दाश्त करने को तैयार न थे फलतः इनमें से अधिकांश देशों ने न तो अमेरिका का संरक्षण स्वीकारा और न ही सोवियत संघ का। शीतयुद्ध की खींचतान से अपने को अलग रखते हुए इन्होंने 'गुटनिरपेक्षता' की आवाज बुलंद की। इस सन्दर्भ में भारत ने मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। तृतीय विश्व के देशों ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से राजनैतिक-आर्थिक विकास का प्रयास किया और विश्व को तीसरे महायुद्ध से दूर रखने का प्रयत्न किया। यह कोशिश आज भी जारी है।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने युद्ध के विनाशकारी प्रभाव को दर्शाया था। अतः दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाये रखने के लिए राष्ट्रसंघ से बेहतर और अधिक कारगर अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना महसूस हुई। अप्रैल 1945 में राष्ट्रपति रूजवेल्ट (अमेरिका) चर्चिल (ब्रिटेन) और स्टालिन (रूस) के प्रयासों से सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन आयोजित की गई तथा इसके फलस्वरूप 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (U.N.O.) अस्तित्व में आया। इस संस्था के जरिये राष्ट्रसंघ की कमजोरियों को दूर करने का प्रयास किया गया। यह संस्था अपने छः अधिकरणों के माध्यम से विश्व शांति और मानव के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक अधिकारों की स्वतंत्रता और विकास के लिए कार्य करती है। U.N.O. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं शांति के लिए राष्ट्रसंघ की तुलना में अधिक सफलतापूर्वक कार्य किया है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सोवियत रूस ने पूर्वी यूरोप के कई हिस्सों पर अपना नियंत्रण कायम किया था और वहाँ साम्यवादी सरकार की स्थापना की। चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया, रोमानिया, बुलगारिया, हंगरी और पूर्वी जर्मनी में साम्यवादी सरकारें स्थापित हुई। चर्चिल के शब्दों में मध्य यूरोप में एक लौह पर्दा आच्छादित हो गया। 1945 के बाद भी दुनिया के कई देश जैसे चीन, वियतनाम और क्यूबा में साम्यवादी सरकारें स्थापित हुई। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि द्वितीय विश्वयुद्ध ने साम्यवाद के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद साम्यवाद अव्यवस्थित था। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद साम्यवाद दुनिया के बड़े हिस्से का सिद्धांत

Scanned with CamScanner

बन गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने विज्ञान को नये रूप में प्रस्तुत किया। एटम बम, रासायनिक युद्ध तथा युद्ध में गैस के इस्तेमाल से यह साबित हो गया कि विज्ञान मानव सभ्यता को ही समाप्त कर सकता है। यह विज्ञान का एक पहलू था इसका दूसरा रूप सुखद एवं सहयोगी था। युद्धकालीन जरूरतों को पूरा करने में सहयोगी विशाल बमवर्षक विमान आगे चलकर समुद्रपारीय यात्राओं का महत्वपूर्ण साधन बना। प्राकृतिक रबर की कमी को दूर करने के लिए कृत्रिम रबर का विकास हुआ। मानवता को भयंकर बिमारियों से बचाने हेतु पेनीसीलिन एवं अन्य एन्टीबायोटिक दवाओं का प्रयोग हुआ। रक्त से प्लाजमा निकालने की विधि खोजी गई। युद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा प्रयुक्त रॉकेट मनुष्य को चाँद तक पहुँचने के लिए प्रेरित किया। विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों ने यह साबित कर दिखाया कि विज्ञान अपने आप में तटस्थ है। विज्ञान का प्रयोग मनुष्य की बुद्धिमानी पर निर्भर है। विज्ञान अब वैज्ञानिकों का विषयवस्तु नहीं रहा बल्कि राजनीतिज्ञों, समाजशास्त्रीयों ने भी विज्ञान में रूची लेनी शुरू की।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद गैर यूरोपीय महाशक्तियों का उदय हुआ। चीन, भारत, अर्जेन्टीना, ब्राजील जैसे अनेक देशों का उदय हुआ जिनमें महाशक्ति बनने की क्षमता थी। यूरोपीय वर्चस्व के दिन लद गये और अब दुनिया में नई शक्तियों का उदय होने लगा।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारतीय राजनीति को भी प्रभावित किया। युद्ध के दौरान जापानी सेनाओं ने द.पू. एशिया में अंग्रेजी फौज के जिन हिन्दुस्तानी सिपाही को युद्धबंदी बनाया था उन्हें प्रेरित और उत्साहित कर सुभाषचन्द्र ने आजाद हिंद फौज का गठन किया तथा 'जय हिंद' एवं 'दिल्ली चलो' का नारा देकर अंग्रेजो के लिए चुनौती पेश की। युद्ध में जबरन शामिल किये जाने के विरोध 1939 में कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया। गाँधीजी के नेतृत्व में अंतिम साम्राज्यविरोधी आंदोलन 'भारत छोड़ो' की शुरुआत हुई तथा आगे चलकर भारत को स्वतंत्रता हासिल हुई।

—X—